SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और भारत की रणनीतिक भूमिका

गीतांजलि चन्द्राकर, पी–एचडी, **हितेश कुमार पटेल,** रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन पोस्ट ग्रेजुएट, कॉलेज ऑफ साइंस, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
गिरीश कांत पाण्डेय, पी–एचडी, प्राचार्य
शासकीय केडीसी महाविद्यालय, नवागढ़, बेमेतरा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
गीतांजलि चन्द्राकर, पी–एचडी
हितेश कुमार पटेल
गिरीश कांत पाण्डेय, पी–एचडी
E-mail : geetanjalichandrakar25@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/12/2025
Revised on : 19/02/2026
Accepted on : 28/02/2026
Overall Similarity : 00% on 20/02/2026

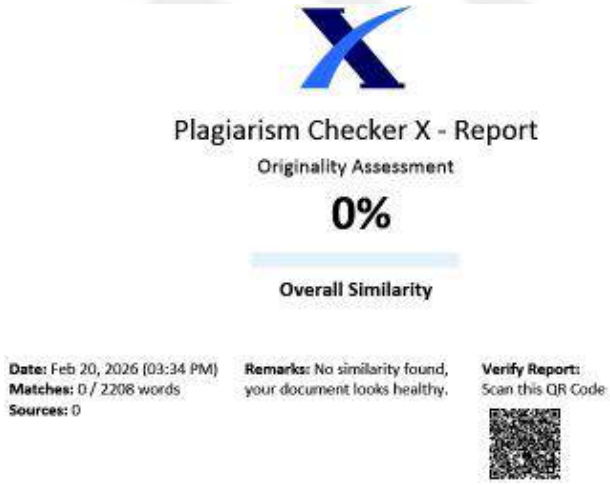

शोध सार

हिंद महासागर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है, जो एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीपों के बीच स्थित है। इसका भौगोलिक विस्तार उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका, पूर्व में ऑस्ट्रेलिया तथा दक्षिण में दक्षिण ध्रुव तक फैला हुआ है। हिंद महासागर क्षेत्र 21वीं सदी में वैश्विक राजनीति, व्यापार और सुरक्षा का केंद्र बन चुका है। विश्व के लगभग 60 प्रतिशत समुद्री व्यापार और 70 प्रतिशत ऊर्जा आपूर्ति मार्ग इसी क्षेत्र से होकर गुजरते हैं। भारत, अपनी भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक विरासत और बढ़ती सैन्य क्षमता के कारण, हिंद महासागर में एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक समृद्धि और वैश्विक भूमिका का आधार है। भारत हिन्द महासागर क्षेत्र में प्रमुख सुरक्षा प्रदाता एवं प्रथम प्रतिक्रिया कर्ता के रूप में उभर रहा है और क्षेत्रीय स्थिरता व सहयोग को बढ़ावा देने में सक्रिय है। प्रस्तुत शोध पत्र हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की भूमिका, उसकी रणनीतिक तैयारी, संयुक्त सैन्य संरचना, रक्षा कूटनीति और वैश्विक महाशक्ति बनने की प्रक्रिया का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द

महासागर, समुद्री सुरक्षा, महाशक्ति, भू–रणनीति, रक्षा कूटनीति.

प्रस्तावना

"जिसका हिंद महासागर पर नियंत्रण है उसी का एशिया पर प्रभुत्व है। बीसवीं सदी में यह महासागर सातों समुद्रों का आधारभूत है। विश्व की भविष्य का निर्णय हिन्द महासागर के लहरों से होगा, और जिसका भी

हिन्द महासागर पर पकड़ होगा वह एशिया के साथ–साथ 21 वीं सदी में विश्व का भी भाग्य विधाता होगा।" यह कथन प्रमुख राणनीतिक विचारक अल्फ्रेड थेयर महान के शब्दों में हिंद महासागर क्षेत्र के महत्त्व को बखूबी से स्पष्ट करता है। अल्फ्रेड थेयर के इस कथन से न केवल हिंद महासागर के ऐतिहासिक महत्त्व का ज्ञान होता है अपितु उसके भू–राजनीतिक महत्त्व का भी पता चलता है। विश्व की भू–राजनीति में महासागर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जीव एवं खनिज संपदा के अतुल्य भंडार, परिवहन या पारागमन के सरल मार्ग होने के कारण विश्व की महान शक्तियां महासागरों पर नियंत्रण हेतु प्रयासरत रही है। इसी सन्दर्भ में भारतीय उपमहाद्वीप में अवस्थिति हिंद महासागर का भू–राजनीतिक महत्त्व अत्यधिक बढ़ा दिया है।

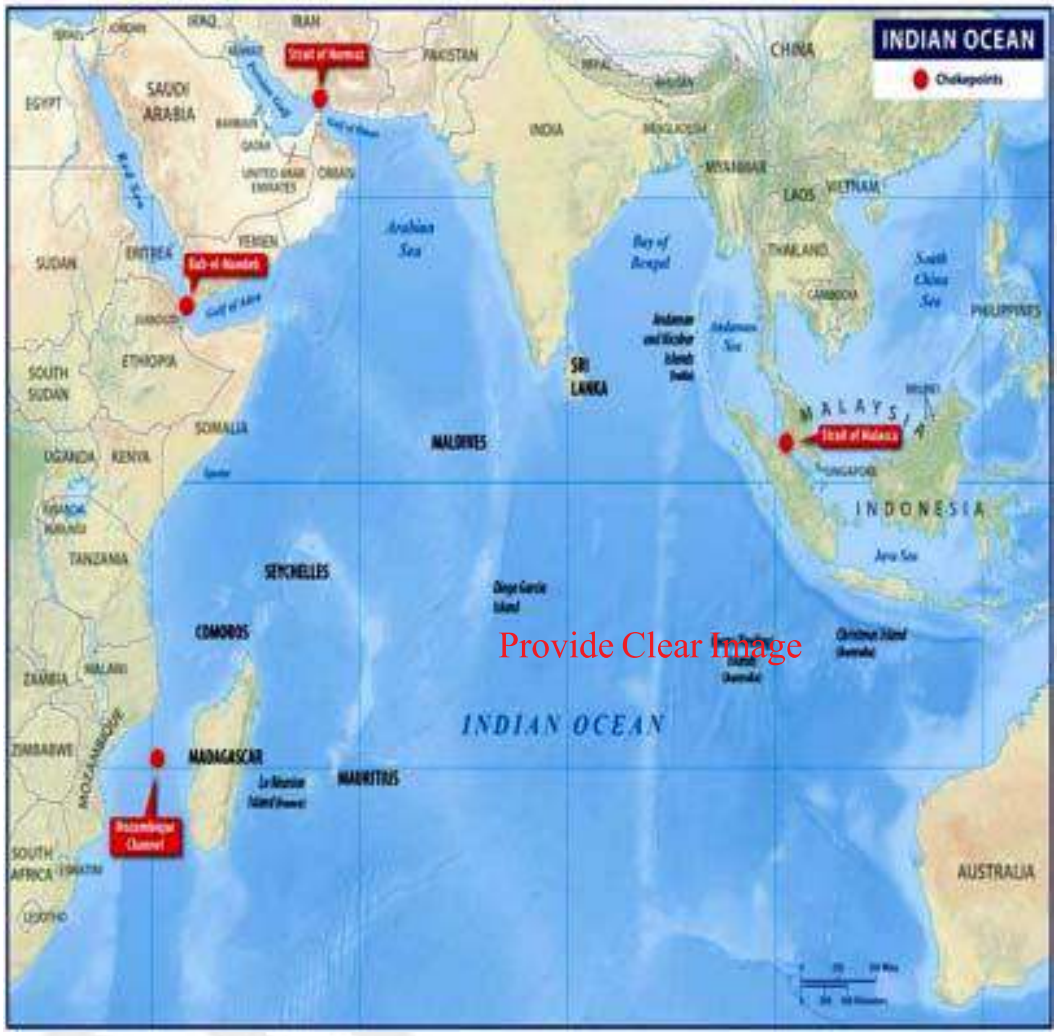

***(Source:** https://www.drishtiias.com)*

हिंद महासागर केवल एक समुद्री क्षेत्र नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन का केंद्र है। शीत युद्ध के बाद और विशेषकर 21वीं सदी में, एशिया के उदय के साथ इसका सामरिक महत्व कई गुना बढ़ गया है। भारत की 11098. 81 किमी विस्तारित समुद्री सीमा हिंद महासागर की राजनीति में स्वाभाविक नेतृत्व प्रदान करते हैं। भारत अब केवल क्षेत्रीय सुरक्षा प्रदाता नहीं, बल्कि वैश्विक स्थिरता का भागीदार बनने की ओर अग्रसर है।

हिंद महासागर क्षेत्र का सामरिक महत्व

हिंद महासागर क्षेत्र में किसी बड़ी शक्ति के प्रभाव का अभाव, प्रमुख शक्तियों के द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र अतिरिक्त विस्तार की आकांक्षा, प्रमुख महाशक्तियों में शक्ति प्रतिस्पर्धा, प्रमुख राष्ट्रों के द्वारा अपनी शक्ति वृद्धि हेतु हिंद महासागर क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों खनिज भंडारों, परिवहन, पारगमन मार्गों का लाभ प्राप्त कर वैश्विक शक्तियों की प्रतिस्पर्धा में शामिल होना, रबड़, जूट, टिन, सोना, हीरा, पेट्रोलियम परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के तीव्र गति से समाप्त

होने से हिंद महासागर से नवीनीकरण ऊर्जा– तरंग ऊर्जा, ज्वार ऊर्जा से प्राप्त की जा रही है। वैश्विक शक्ति संघर्ष की प्रतिस्पर्धा में विरोधी राष्ट्रों की शक्ति वृद्धि को रोकने हेतु राजनीतिक–रणनीतिक गठबंधनों की स्थापना, हिंद महासागर के निकटवर्ती देशों का पश्चिमी एशिया के तेल उत्पादक देशों से तेल प्राप्त करना, इसके अतिरिक्त हिंद महासागर, प्रशांत और अटलांटिक महासागर के बाद तीसरा सबसे बड़ा महासागर है। विश्व के तेल भंडार का लगभग 40 प्रतिशत हिंद महासागर में है और यह हिंद महासागर के उत्तर–पश्चमी भाग पर केन्द्रित है, जो खाड़ी देशों के नाम से जाने जाते हैं। विश्व का 80 प्रतिशत कच्चा तेल हिंद महासागर के माध्यम से पहुंचाया जाता है। राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चार जलडमरूमध्य– हार्मुज जलडमरूमध्य, बाव–एल–मंडव जलडमरूमध्य, मलक्का जलडमरूमध्य एवं मोजांबिक चौनल है, जहां से अधिकांश समुद्री व्यापार इनसे होकर गुजरता है जिसके कारण हिंद महासागर क्षेत्र एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में आंका जा रहा है।

चीन अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के हिस्से के रूप में पूरे क्षेत्र में बुनियादी ढाँचागत परियोजनाओं में अरबों डॉलर का निवेश कर रहा है। इस निवेश के माध्यम से चीन हिंद महासागर के सीमावर्ती देशों में अपनी सामरिक बढ़त को बनाना चाहता है। इसी कारण से भारत, अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन जैसी प्रमुख शक्तियों ने अपनी उपस्थिति बढ़ा दी है। चीन लगातार इस क्षेत्र में अपनी नौसैन्य शक्ति को बढ़ा रहा है। चीन, पाकिस्तान और श्रीलंका की भाँति जिबूती में भी एक नौसैन्य चौकी स्थापित कर रहा है, जो बीजिंग के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। जिबूती में स्थापित नौसैन्य बेस के माध्यम से चीन हिंद महासागर में स्थित परिवहन मार्गों को नियंत्रित कर सकता है, जिससे भारत की कच्चे तेल और ऊर्जा संबंधी सप्लाई लाइन को काटा जा सकता है। चीन अपनी 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' नीति के अनुसार, भारत को घेरते हुए हिंद महासागर में स्थित देशों में अपने नौसैन्य अड्डे स्थापित कर भारत पर सामरिक बढ़त हासिल करना चाहता है।

हिंद महासागरीय क्षेत्र में भारत की नीति पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र के संबंध में बदलाव आया है। पहले भारत की नीति में इस क्षेत्र के लिये अलगाव की स्थिति थी लेकिन अब हिंद महासागर क्षेत्र के लिये भारत की नीति भारतीय सामुद्रिक हितों से परिचालित हो रही है। सागर (क्षेत्र में सभी के सुरक्षा एवं विकास) पहल द्वारा भारत इस क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा पर जोर दे रहा है साथ ही इस रणनीति को मूर्तरूप देने के लिये सागरमाला परियोजना पर कार्य कर रहा है, ताकि भारत अपनी तटीय अवसंरचना को सुदृढ़ करके अपनी क्षमता में वृद्धि कर सके। इस तरह भारत न सिर्फ हिंद महासागर क्षेत्र में अपने हितों को साध सकेगा बल्कि नीली अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकेगा। नीली अर्थव्यवस्था पर बल देने तथा हिंद महासागर क्षेत्र के महत्त्व को देखते हुए ही भारत सरकार बिम्सटेक जैसे संगठनों से समुद्र संबंधों पर पुनः विचार कर नये आयाम जोड़ रही है। सागर पहल वर्ष 2015 में नीली अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करने हेतु एक सिद्धांत बनाया गया है। यह एक समुद्री पहल है जो हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की शांति, स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिये हिंद महासागर क्षेत्र को प्राथमिकता देती है। यह विश्व के सभी देशों की नौ सेनाओं और समुद्री सुरक्षा एजेंसियों के बीच सहयोग को तेज करने के लिये सहयोग प्राप्त करने का एक मंच है। भारत के संपूर्ण क्षेत्र के लिये सुरक्षा प्रदाता की भूमिका निभाते हुए सागर पहल हिंद महासागर में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह पहल 1997 में स्थापित हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग संघ के सिद्धांतों के अनुरूप है।

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत प्रमुख संवादों के माध्यम से अपनी सामरिक साझेदारियों को मजबूत कर रहा है। इस क्षेत्र में भारत के सामने जिस तरह की समुद्री सुरक्षा संबंधी चुनौतियां खड़ी हैं, उन्हें देखते हुए भारत के लिए इस क्षेत्र की अन्य प्रमुख ताकतों के साथ व्यापक और समझदारी भरी साझेदारियां करना जरूरी हो गया है। इनमें बहुपक्षीय और द्विपक्षीय स्तर पर मजबूती से संवाद करना शामिल है। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान के साथ भारत के चतुषकोणीय सुरक्षा संवाद (QUAD) में भारत अपने सामरिक दांव–पेंच के तहत हिंद महासागर क्षेत्र में कई ऐसी साझेदारियां कर रहा है। भारत ने लंबे समय से हिंद महासागर क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है।

हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में भारत की रणनीति

हिंद महासागर क्षेत्र में भारत अपने ''पड़ोसी प्रथम की नीति'' और SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) सिद्धांत से प्रेरित रही है। मार्च 2025 में भारत ने MAHASAGAR (क्षेत्रों में सुरक्षा एवं विकास के लिए पारस्परिक और समग्र उन्नति) सिद्धांत पेश किया था, जो SAGAR सिद्धांत का ही विस्तृत रूप है।

***(Source:** https://visionias.in)*

भारत ने स्वयं को हिंद महासागर क्षेत्र में समग्र सुरक्षा प्रदाता के रूप में स्थापित किया है। भारत सक्रिय रूप से समुद्री डकैती विरोधी अभियानों में हिस्सा लेता है। यह अन्य देशों के साथ मिलकर IUU (अवैध, असूचित और अविनियमित) मत्स्यन, समुद्री आतंकवाद तथा समुद्री अपराध से निपटता है। भारत संयुक्त EEZ निगरानी अभ्यास करता है और जानकारी साझा करने के लिए सूचना संलयन केंद्र–हिंद महासागर क्षेत्र (IFC- IOR) का उपयोग करता है। भारत ने मॉरीशस, मालदीव, श्रीलंका और सेशेल्स जैसे हिंद महासागर क्षेत्र के तटीय देशों के साथ मजबूत द्विपक्षीय साझेदारी को बढ़ावा दिया है।

विकासात्मक सहायता, क्षमता निर्माण कार्यक्रम, आपदा राहत व मानवीय सहायता (HADR), रक्षा व समुद्री सुरक्षा सहयोग आदि। भारत IOR के बहुपक्षीय मंचों में अहम भूमिका निभाता है, जैसे– इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन, इंडियन ओशन कमीशन आदि। भारत प्ट् में बंदरगाहों के विकास में निवेश कर रहा है, जैसे ईरान में चाबहार पोर्ट तथा श्रीलंका, मॉरीशस और सेशेल्स में विभिन्न अवसंरचना परियोजनाएं आदि। इसका उद्देश्य समुद्री संपर्क एवं रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत करना है। भारत की सागरमाला 2.0 प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य पोर्ट कनेक्टिविटी को बेहतर करना, आंतरिक जलमार्गों का विकास करना और औद्योगिक वृद्धि को बढ़ावा देना है। इससे भारत की समुद्री प्रतिस्पर्धात्मकता को और मजबूत किया जा सकेगा। भारत एक भरोसेमंद 'प्रथम सहायता प्रदाता' की भूमिका निभाता है।

भारतीय रणनीति के समक्ष चुनौतियाँ और खतरे

वर्तमान में हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और अंतरिक्ष सुरक्षा से संबंधित नए खतरों का जन्म हुआ है साथ ही, गैर–पारंपरिक सुरक्षा खतरे भी उत्पन्न हुए है। स्थलीय सीमाओं और समुद्री सीमाओं में बहुत भिन्नता होती हैं उदाहरण के लिये समुद्री सीमाओं पर बाड़ लगाना संभव नहीं है अतः घुसपैठ की स्थिति में इसके लिये शून्य सहनशीलता की अवधारणा सही सिद्ध नहीं हो सकती है। स्थलीय सीमा विवाद अधिकांशत द्विपक्षीय होते हैं। इसके विपरीत समुद्री क्षेत्र बहुपक्षीय हितों वाले क्षेत्र होते हैं, जहां बहुपक्षीय समुद्री कानून लागू होते हैं। कोई राष्ट्र समुद्री क्षेत्र में एकतरफा फैसले या संधि को लागू नहीं कर सकता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है, जिसके लिये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग आम सहमति की आवश्यकता होती है। समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCLOS) इसका एक उदाहरण है। समुद्री सीमाओं की सुरक्षा के लिये तकनीक एवं इससे निपटने के अन्य तरीकों की आवश्यकता है।

भारत के प्रयास

भारत द्वारा स्थापित बहु–एजेंसी समुद्री सुरक्षा समूह (MAMSG) को निम्नलिखित बिंदुओं के लिये परिकल्पित किया गया है:

- तटीय और अपतटीय सुरक्षा सहित समुद्री सुरक्षा के सभी पहलुओं के समन्वय को सुनिश्चित करना।
- वर्तमान और भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने में संस्थागत, नीतिगत, तकनीकी और परिचालन अंतराल को भरने के लिये एक स्थायी और प्रभावी तंत्र प्रदान करना।
- यह समूह तत्काल और समन्वित प्रतिक्रिया की आवश्यकता वाले समुद्री आकस्मिकताओं को भी संबोधित करेगा।
- प्रौद्योगिकी और मानव संसाधनों में निवेश समुद्री संसाधनों के दोहन के आर्थिक हित एवं तटीय बुनियादी ढांचा के लिये महत्वपूर्ण हैं।

समुद्री सुरक्षा के लिये कई महत्त्वपूर्ण नीतिगत मुद्दों को भी बढ़ावा देना आवश्यक है, जिसमें निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:

- समुद्री सुरक्षा पर मौजूदा आदेशों एवं नीतियों का मानचित्रण।
- समुद्री आकस्मिकताओं के लिये मानक संचालन प्रक्रियाओं की समीक्षा।
- बंदरगाहों की सुरक्षा तथा तटीय बुनियादी ढांचे की समीक्षा।
- एक राष्ट्रीय समुद्री डाटाबेस का निर्माण।
- तटीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की क्षमता निर्माण।
- नीली अर्थव्यवस्था।

क्षेत्रीय से वैश्विक महाशक्ति की ओर भारत

भारत की वैश्विक भूमिका निम्न माध्यमों से उभर रही है:

- संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में भागीदारी।
- वैश्विक समुद्री अभ्यास।
- इंडो–पैसिफिक में रणनीतिक साझेदारी।
- रक्षा उत्पादन और निर्यात।
- भारतीय सेना का पेशेवर चरित्र और लोकतांत्रिक नियंत्रण उसे अन्य उभरती शक्तियों से अलग बनाता है।

निष्कर्ष

हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में भारत की नीति सुरक्षा बनाए रखने, क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने और राजनीतिक एवं आर्थिक हितों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य इस क्षेत्र में अधिक समृद्धि को बढ़ावा देना तथा संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय (UNCLOS) के आधार पर हिंद महासागर को एक मुक्त, खुला और समावेशी स्थान बनाना है। हिंद महासागर क्षेत्र भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक समृद्धि और वैश्विक भूमिका का आधार है। भारत "नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर" के रूप में उभर रहा है और क्षेत्रीय स्थिरता व सहयोग को बढ़ावा देने में सक्रिय है। सामरिक संयम, सहयोगात्मक सुरक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ भारत एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है जो भारत को क्षेत्रीय शक्ति से वैश्विक महाशक्ति तक ले जाने में निर्णायक भूमिका निभा रही है।

संदर्भ सूची

1. भारतीय नौसेना. (2017) भारतीय समुद्री सुरक्षा रणनीति, (हिंदी संस्करण) रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. चेलानी, ब्रह्मा (2013) *एशिया की जल–राजनीति और भारत,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।
3. गुप्ता, अरुण (2018) *इंडो–पैसिफिक और भारत की रणनीति,* ओरिएंट ब्लैकस्वान (हिंदी संस्करण), नई दिल्ली।
4. कुमार, पवन (2019) *भारतीय समुद्री नीति और ब्लू इकॉनमी,* रावत प्रकाशन, जयपुर।
5. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (वर्ष 2023–24) वार्षिक प्रतिवेदन (समुद्री सुरक्षा अध्याय सहित) नई दिल्ली।
6. सखूजा, विजय (2016) *हिंद महासागर की समुद्री सुरक्षा,* ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. त्रिपाठी, आर. पी. (2016) *हिंद महासागर और वैश्विक शक्ति संतुलन,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार (2019) *सागर दृष्टि दस्तावेज.* विदेश मंत्रालय, भारत सरकारनई दिल्ली।
9. BIMSTEC (2022) BIMSTEC charter.
10. Indian Navy (2015) Ensuring secure seas: Indian maritime security strategy. Government of India, New Delhi.
11. Indian Ocean Rim Association (2022) IORA action plan and declarations, Indian Ocean Rim Association, Mauritius.
12. Ministry of External Affairs (2015) SAGAR: Security and growth for all in the region. Government of India, New Delhi.
13. Ministry of Defence (2023) Annual report 2022–23. Government of India, New Delhi.
14. Quadrilateral Security Dialogue (2023) Joint leaders' statement.
15. United Nations (1982) United Nations Convention on the Law of the Sea (UNCLOS), United Nations, New York.
16. https://www.drishtiias.com, Access on 24/10/2025.
17. https://www.pib.gov.in, Access On 23/10/2025.
18. https://www.sanskritiias.com, Access on 23/10/2025.
19. https://visionias.in. Access on 24/10/2025.

****